उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण

ज्योति तिवाड़ी*

विद्यालयी शिक्षा में पुस्तकों का विशेष महत्व है। सार पाठ्यपुस्तकें मानव की महत्वपूर्ण रचना हैं। मनुष्य अपने अनुभव एवं अनुभुतियों का पुस्तक के रूप में संचय करता है। पाठ्यपुस्तक ज्ञान संचय का साधन हैं, जिसका लाभ नयी पीढ़ी को होता है। पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से संचित ज्ञान को शिक्षक अपने छात्रों को प्रदान करते हैं। पाठ्यपुस्तकों में पाठ्यसामग्री के साथ-साथ चित्रों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। एन.सी.ई.आर.टी. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण करने हेतु संबंधित शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के विचारों को जानने का प्रयास किया गया है तथा निष्कर्ष रूप में पाया गया है कि निम्न पाठ्यपुस्तकों में समावेशित ज़्यादातर चित्र स्पष्ट, विषय-वस्तु संबंधित, सार्थक व प्रभावशाली हैं, जो चित्र उद्देश्यानुसार उचित नहीं पाए गए हैं, उनकी तरफ़ पाठ्यपुस्तक निर्माता ध्यान दें। चित्रों में दोनों लिंगों के चित्रण को उचित स्थान दिया गया है। साथ ही देश के सभी स्थानों, वर्गों व धर्मों के लोगों को भी उचित प्रतिनिधित्व दिया गया है। पाठ्यपुस्तकों में चित्र की अनेक नवीन विधाएँ, जैसे — चित्र निबंध, चित्रकथापट्ट, कोलाज, फ़ोटोग्राफ़ आदि का पर्याप्त प्रयोग हुआ है तथा विद्यार्थियों द्वारा इन विधियों के प्रति सकारात्मक रुझान प्राप्त हुआ है।

*आम्रपाली सिलिकन सिटी, सेक्टर 76, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301

मानव सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, केवल वही सदियों से एकत्र किए गए ज्ञान का लाभ उठा सकता है, अन्य प्राणियों से भिन्न मानव अतीत से प्राप्त ज्ञान को अपने नए कार्य का आधार बनाता है। मानवीय ज्ञान की तीन अवस्थाएँ होती हैं — प्रथम अवस्था में ज्ञान को संचित किया जाता है, द्वितीय अवस्था में ज्ञान का प्रसार एवं संचार किया जाता है, तृतीय अवस्था में ज्ञान की वृद्धि की जाती है। ज्ञान की प्रथम अवस्था, जिसमें ज्ञान का संचय किया जाता है, में पुस्तकों का बहुत बड़ा हाथ होता है, पुस्तकें ही वह साधन हैं जिसमें ज्ञान का संचय कर उसे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तानांतरित किया जाता है। मौखिक ज्ञान को अपने स्वरूप को खोते हुए लुप्त होने का खतरा रहता है। विद्यालयी शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों का बहुत बड़ा हाथ है, बिना पाठ्यपुस्तकों के हम किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था की कल्पना नहीं कर सकते हैं, इनका अतीत में भी महत्व था और आज भी शक्तिशाली महत्व है, क्योंकि पाठ्यपुस्तक विद्यालय या कक्षा में शिक्षक तथा विद्यार्थी के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती है जो किसी एकांकी विषय या संबंधित विषयों की पाठ्य विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण करती है। जब हम 60 के दशक की पाठ्यपुस्तकों की तुलना 80 के दशक की पाठ्यपुस्तकों से करते हैं तो पहला अंतर जो हमारे दिमाग में आता है वह है चित्रों का प्रसार और 80 के दशक की तुलना आज की पाठ्यपुस्तकों से करने पर हम पाएँगे की न सिर्फ़ चित्रों का संख्यात्मक प्रसार हुआ है, बल्कि उनकी गुणवत्ता में भी बहुत अधिक वृद्धि हुई है। पहले जो चित्र श्वेत श्याम थे, आज वे चित्र रंगीन व बहुआयामी हैं, जिनमें चित्रों की अनेक विधाओं, जैसे कि फ़ोटोग्राफ़, पोस्टर, कार्टून, चित्रकथा, हस्तनिर्मित चित्रों आदि का प्रयोग बहुत बढ़ गया है।

इन सभी प्रयासों के बावजूद अधिकतर भारतीय पाठ्यपुस्तकों की स्थिति शोचनीय है तथा इन पर बहुत से आक्षेप लगते रहे हैं। यद्यपि, भारतीय शैक्षिक कार्यक्रम में पाठ्यपुस्तकों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। इनकी शोचनीय अवस्था के विषय में माध्यमिक शिक्षा आयोग का कहना है कि हम आधुनिक विद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों के स्तर से बहुत असंतुष्ट हैं और हमारा विचार है कि इनमें आमूल सुधार किए जाने चाहिए।"

वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में गुणवत्ता बढ़ाने, उन्हें रोचक तथा अंतःक्रियात्मक बनाने के लिए तथा विद्यार्थियों में विषय-वस्तु की समझ बढ़ाने के लिए, इनमें चित्रों का प्रयोग बढ़ा है तथा चित्रों की अनेक विधाओं का इस्तेमाल किया जाने लगा है, जैसे — चित्रकथा, तस्वीरें, चित्र निबंध आदि। इन सभी विधाओं का विषय-वस्तु से अभिन्न संबंध है, इन चित्रों के सहारे मुद्दों का और विश्लेषण किया जा सकता है और उन्हें केवल सजावट के तौर पर ही इस्तेमाल नहीं किया गया है, ऐसा पुस्तक के रचियताओं ने शिक्षकों के लिए आरंभिक टिप्पणी में घोषणा की है। इस घोषणा से अनेक प्रश्न दिमाग में उभरते हैं कि क्या ये चित्र वास्तव में विषय-वस्तु को स्पष्ट कर पाते हैं? क्या विद्यार्थी उनमें रुचि लेते हैं? क्या ये चित्र सार्थक व स्पष्ट हैं? तथा उनका विषय-वस्तु से संबंध है या उन्हें केवल सजावट के लिए ही प्रयोग में लाया गया है।

समस्या का औचित्य

एक प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के दौरान शोधकर्ती ने यह महसूस किया कि ज़्यादातर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की पुस्तकों को अधिक महत्व देते हैं तो शोधकर्ती ने इसके पीछे छिपे रहस्य को जानने का प्रयास किया और पाया कि इन पुस्तकों में अन्य पाठ्यपुस्तकों की तुलना में चित्रों की संख्या बहुत अधिक थी और चित्रों की अनेक विधाओं का प्रयोग भी किया गया था। शोधकर्ती के मन में ये सवाल उत्पन्न हुए कि — क्या चित्र विद्यार्थियों की विषय के प्रति समझ को विस्तार दे रहे हैं? क्या ये चित्र सार्थक व स्पष्ट हैं? चित्रों के प्रति अध्यापकों का क्या दृष्टिकोण है? क्या वे इन चित्रों को पढ़ाते समय उपयोग करते हैं? विद्यार्थी इन चित्रों के विषय में क्या सोचते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए शोधकर्ती ने उच्च प्राथमकि स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण करने का मानस बनाया।

शोध समस्या के उद्देश्य

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुंसधान और प्रशिक्षण परिषद् की उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों की स्पष्टता का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की सार्थकता का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की प्रभावशीलता का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों की विधाओं के प्रकारों का संख्यात्मक अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों में उपस्थित लैंगिक बोध का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों द्वारा सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक पृष्ठभूमि के बोध का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में मुखपृष्ठ पर बने चित्रों का विषय से संबंध का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों के प्रति अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोणों का अध्ययन।
- उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त चित्रों के प्रति विद्यार्थियों के व्यक्तिगत दृष्टिकोणों का अध्ययन।

शोध समस्या क्षेत्र

जयपुर ज़िले के उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी तथा जयपुर ज़िले के निजी स्तर व सरकारी विद्यालयों के सेवारत शिक्षक तथा नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकें।

शब्दावली

उच्च प्राथमिक स्तर — कक्षा 6, 7 व 8 को उच्च प्राथमिक स्तर कहा जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के स्तरों का जो निर्धारण हुआ है, उसमें उच्च प्राथमिक स्तर को लेकर कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

नागरिक शास्त्र — विश्वकोश के अनुसार, "नागरिक शास्त्र समाज में मनुष्य के अधिकारों एवं कर्तव्यों का विज्ञान है।" नागरिक शास्त्र वह विषय है जिसके द्वारा विद्यार्थियों में अच्छे नागरिक गुणों का विकास किया जाता है।

पाठ्यपुस्तक — पाठ्यपुस्तक कक्षा में शिक्षक तथा विद्यार्थी की सहायता के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती है जो किसी एकांकी विषय से संबंधित ज्ञान का प्रस्तुतीकरण करती है।

चित्र — समतल धरातल, जैसे—भित्ति, काष्ठ-फलक आदि पर रंग तथा रेखाओं की सहायता से लंबाई, चौड़ाई, गोलाई तथा ऊँचाई को अंकित कर किसी रूप का आभास कराना चित्र है।

विषय-वस्तु विश्लेषण — व्यवहार परक विज्ञानों में अधिकांशतः विषय सामग्री का स्वरूप गुणात्मक रहता है अथवा शाब्दिक, लिखित, यांत्रिक साधनों द्वारा अभिलेखित व सांकेतिक रहता है। ऐसी सामग्री को वैज्ञानिक सामग्री का रूप प्रदान करने के लिए उनके क्रमबद्ध संवर्गीकरण, वस्तुपरक प्रस्तुतीकरण, सांख्यिकी विश्लेषण तथा उपयुक्त सामान्यीकरण की आवश्यकता होती है। यही कार्य विषय-वस्तु विश्लेषण में किया जाता है।

उपर्युक्त शोध में शोधकर्ती उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण किया और यह जानने का प्रयास किया है कि क्या वे स्पष्ट हैं, सार्थक हैं, विषय-वस्तु से संबंधित हैं और उनके माध्यम से विषय-वस्तु स्पष्ट हो रही है या नहीं?

शोध विधि — प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्ती द्वारा विषय-वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

समग्र — उच्च प्राथमिक स्तर की सामाजिक ज्ञान की पाठ्यपुस्तकें तथा जयपुर ज़िले के उच्च प्राथमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थी व सेवारत शिक्षक।

न्यादर्श — प्रस्तुत शोधकार्य के लिए शोधकर्ती न्यादर्श उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकें तथा 300 विद्यार्थी व 60 शिक्षक हैं।

न्यादर्श चयन विधि — शोधकर्ती ने अपने शोधकार्य के लिए पुस्तकों व अध्यापकों का चयन सोउद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा तथा विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया। सरकारी विद्यालयों की कक्षा 6, 7 व 8 के 30 शिक्षक (प्रत्येक कक्षा के 10) व निजी विद्यालय की कक्षा 6, 7 व 8 के 30 शिक्षक (प्रत्येक कक्षा के 10)। सरकारी विद्यालयों की कक्षा 6, 7 व 8 के 150 विद्यार्थी (प्रत्येक कक्षा के 50) व निजी विद्यालयों की कक्षा 6, 7 व 8 के 150 विद्यार्थी (प्रत्येक कक्षा के 50)।

उपकरण — उच्च प्राथमिक स्तर की एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्र, स्वनिर्मित मिश्रित प्रश्नावली एवं संरचित साक्षात्कार।

आँकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या — प्रतिशत तथा स्तंभ रेखा चित्र।

समस्या का सीमांकन

शोध की विषय-वस्तु को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अपने अनुसंधान को निम्न सीमाओं तक परिसीमित करने का प्रयास किया है —

- प्रस्तुत शोधकार्य केवल उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित रहेगा। इसमें सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों को शामिल नहीं किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर ज़िले के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के 300 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोधकार्य में जयपुर ज़िले के सरकारी व निजी विद्यालयों के 60 सेवारत शिक्षकों को ही शामिल किया जाएगा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों के विषय-वस्तु विश्लेषण से संबंधित है, जिसके 10 प्रमुख उद्देश्य थे—

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुंसधान और प्रशिक्षण परिषद् की उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों की स्पष्टता का अध्ययन

(i) *कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की स्पष्टता* — कक्षा 6 की

चित्र 1

नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 80 चित्र प्रदर्शित हैं। इन चित्रों में से कुल 67 स्पष्ट हैं जबकि 13 चित्र अस्पष्ट हैं, अतः कक्षा 6 की पुस्तक के कुल 84 प्रतिशत चित्र स्पष्ट हैं व 16 प्रतिशत चित्र स्पष्ट नहीं हैं।

(ii) *कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की स्पष्टता* — कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 114 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से 75 चित्र स्पष्ट, 39 चित्र अस्पष्ट हैं, अतः कक्षा 7 की पुस्तक के कुल 66 प्रतिशत चित्र स्पष्ट हैं तथा 34 प्रतिशत चित्र अस्पष्ट हैं।

(iii) *कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की स्पष्टता* — कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 112 चित्र अंकित हैं, जिनमें से 70 चित्र स्पष्ट हैं, 42 चित्र अस्पष्ट हैं, अतः कक्षा 8 की पुस्तक के 62.50 प्रतिशत चित्र स्पष्ट हैं तथा 37.50 प्रतिशत चित्र अस्पष्ट हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों के ज़्यादातर चित्र स्पष्ट हैं, लेकिन फिर भी जो चित्र अस्पष्ट हैं उनको स्पष्ट करने की मैं अनुशंसा करती हूँ। उदाहरण के लिए, कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 62 पर अंकित चित्र (चित्र1) स्पष्ट नहीं है, अतः मैं पाठ्यपुस्तकों के निर्माताओं से इसके बदलाव या स्पष्ट करने की अनुशंसा करती हूँ।

2. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध का अध्ययन

(i) *कक्षा 6 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध* — कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित 80 चित्रों में से 67 चित्रों का संबंध विषय-वस्तु से है तथा 13 चित्रों का संबंध विषय-वस्तु से नहीं पाया गया है, अतः 84 प्रतिशत चित्र विषय-वस्तु से संबंधित पाए गए तथा 16 प्रतिशत चित्र विषय-वस्तु से संबंधित नहीं पाए गए।

(ii) *कक्षा 7 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध* — कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 114 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से 111 चित्रों का विषय-वस्तु के साथ संबंध है तथा 3 चित्रों का विषय-वस्तु के साथ संबंध नहीं है, अतः कक्षा 7 की पुस्तक के कुल 97 प्रतिशत चित्रों का विषय-वस्तु के साथ संबंध है तथा 3 प्रतिशत चित्रों का संबंध नहीं है।

चित्र 2

(iii) *कक्षा 8 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध* — कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 112 चित्र अंकित हैं, जिनमें से 103 चित्र विषय-वस्तु से संबंधित हैं तथा 9 चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध नहीं है, अतः कक्षा 8 की पुस्तक के 92 प्रतिशत चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध है तथा 8 प्रतिशत चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध नहीं है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि उपर्युक्त पुस्तकों के ज़्यादातर चित्रों का संबंध विषय-वस्तु से है, जिन चित्रों का विषय-वस्तु से संबंध नहीं है उन पर पाठ्यपुस्तक निर्माता ध्यान दें। उदाहरण के लिए, कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ संख्या 17 पर अंकित चित्र (चित्र 2) का विषय-वस्तु से संबंध नहीं दिख रहा है, प्रस्तुत चित्र के नीचे पंक्ति भी अंकित नहीं है तथा लिखित सामग्री जिसके साथ यह चित्र प्रस्तुत किया गया है, में लड़के व लड़की में भेदभाव का वर्णन किया गया है।

3. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की सार्थकता का अध्ययन

(i) *कक्षा 6 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की सार्थकता* — कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित 80 चित्रों में से 64 चित्र सार्थक हैं तथा 16 चित्र सार्थक नहीं हैं। अतः 80 प्रतिशत चित्र सार्थक हैं तथा 20 प्रतिशत चित्र सार्थक नहीं हैं।

(ii) *कक्षा 7 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की सार्थकता* — कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 114 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से 109 चित्रों की सार्थकता है तथा 5 चित्रों की सार्थकता नहीं हैं, अतः कक्षा 7 की पुस्तक के कुल 96 प्रतिशत चित्र सार्थक हैं तथा 4.39 प्रतिशत चित्रों की सार्थकता नहीं है।

(iii) *कक्षा 8 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की सार्थकता* — कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 112 चित्र अंकित हैं, जिनमें से 101 चित्र सार्थक हैं तथा 11 चित्र सार्थक नहीं हैं, अतः कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पुस्तक के कुल 90 प्रतिशत चित्र सार्थक हैं तथा 10 प्रतिशत चित्र सार्थक नहीं हैं। निष्कर्ष रूप में निम्न कक्षाओं के ज़्यादातर चित्र उपर्युक्त हैं तथा जो चित्र सार्थक नहीं है, उनकी तरफ़ पाठ्यपुस्तक निर्माता ध्यान दें। उदाहरण के लिए, कक्षा 7 की पृष्ठ संख्या 72 पर प्रकाशित चित्र (चित्र 3) में टेलीविजन के आविष्कारक जॉन एल बैयर्ड दिख ही नहीं रहे हैं, अतः इस चित्र की सार्थकता नहीं है।

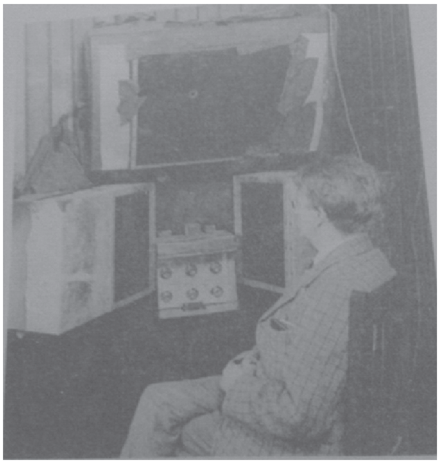

चित्र 3

4. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की प्रभावशीलता का अध्ययन

(i) *कक्षा 6 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की प्रभावशीलता* — कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित 80 चित्रों में से 40 चित्र प्रभावशाली हैं तथा 40 चित्र प्रभावशाली नहीं हैं। अतः कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक के 50 प्रतिशत चित्र प्रभावशाली हैं तथा 50 प्रतिशत चित्र प्रभावशाली नहीं हैं।

(ii) *कक्षा 7 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की प्रभावशीलता* — कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 114 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से 87 चित्र

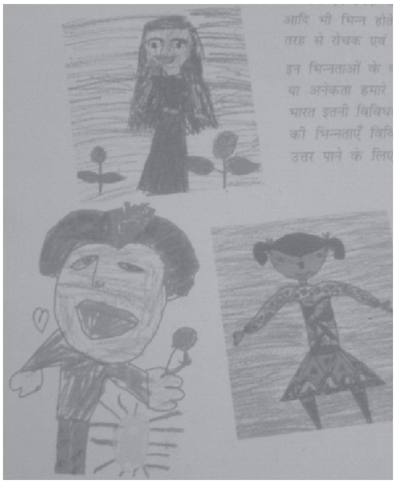

चित्र 4

प्रभावशाली हैं तथा 27 चित्र प्रभावशाली नहीं हैं। अतः कक्षा 7 की पुस्तक के कुल 76 प्रतिशत चित्रों की प्रभावशीलता है तथा 24 प्रतिशत चित्रों की प्रभावशीलता नहीं है।

(iii) *कक्षा 8 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की प्रभावशीलता* — कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में कुल 112 चित्र अंकित हैं, जिनमें से 87 चित्र प्रभावशाली हैं तथा 25 चित्र प्रभावशाली नहीं हैं। अतः कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक के 78 प्रतिशत चित्र प्रभावशाली हैं तथा 22 प्रतिशत चित्र प्रभावशाली नहीं हैं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि निम्न पुस्तकों के ज़्यादातर चित्र प्रभावशाली हैं व जिन चित्रों की प्रभावशीलता नहीं पाई गई, उन पर पाठ्यपुस्तक निर्माता ध्यान दें।

उदाहरण के लिए, कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ संख्या 3 पर प्रकाशित चित्र (चित्र 4) प्रभावशाली नहीं है, यह चित्र कक्षा 6 के हमउम्र विद्यार्थियों द्वारा बनाया हुआ नहीं लग रहा है, बल्कि इस स्थान पर विविधता दिखाने हेतु धर्म, देश व वेशभूषा के लोगों का चित्र दर्शाया जाता तो और प्रभावी होता।

5. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों की विधाओं के प्रकारों का संख्यात्मक अध्ययन

(i) *कक्षा 6 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की विधाएँ* — कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित 80 चित्रों में से 28 चित्र हस्तनिर्मित हैं तथा 35 फ़ोटोग्राफ़ चित्र हैं, 7 कार्टून चित्र हैं व 6 बालनिर्मित चित्र हैं व मानचित्रों की संख्या 4 है, अतः कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में 35 प्रतिशत चित्र हस्तनिर्मित हैं, 43.75 प्रतिशत चित्र फ़ोटोग्राफ़ हैं, 7.75 प्रतिशत चित्र बालनिर्मित हैं 8.50 प्रतिशत कार्टून चित्र हैं व 5 प्रतिशत चित्र मानचित्र हैं।

(ii) *कक्षा 7 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की विधाएँ* — कक्षा 7 की पुस्तक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में कुल 114 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से 73 चित्र फ़ोटोग्राफ़ हैं, 20 चित्र हस्तनिर्मित हैं, चित्रकथा पट्ट की संख्या 6 है, कोलॉज की संख्या 9 है, मानचित्रों की संख्या 4 है तथा पोस्टरों की संख्या 2 है। अतः 64 प्रतिशत चित्र फ़ोटोग्राफ़ हैं, 18 प्रतिशत

Chapter 10.indd 98 03-08-2017 12:56:07

चित्र हस्तनिर्मित हैं, चित्रकथापट्ट की संख्या 5 प्रतिशत है, कोलॉज की संख्या 8 प्रतिशत है, मानचित्रों की संख्या 3.50 प्रतिशत है तथा पोस्टरों की संख्या 1.7 प्रतिशत है।

(iii) *कक्षा 8 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों की विधाएँ* — कक्षा 8 की पुस्तक सामाजिक व राजनीतिक जीवन भाग-3 में कुल 112 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से 75 चित्र फ़ोटोग्राफ़ हैं, 18 चित्र हस्तनिर्मित हैं, 8 चित्रकथापट्ट हैं, पोस्टर चित्र 3 हैं, मानचित्र 2, बालनिर्मित चित्र 3, पेंटिग 1, कार्टून 1, चित्र निबंध 1 है। जिनका प्रतिशत वार विवरण निम्न है — फ़ोटोग्राफ़ 67 प्रतिशत, हस्तनिर्मित चित्र 16 प्रतिशत, चित्रकथापट्ट 7 प्रतिशत, पोस्टर 3 प्रतिशत, मानचित्र 1.78 प्रतिशत, बालनिर्मित चित्र 2.67 प्रतिशत, पेंटिग 0.90 प्रतिशत, कार्टून 0.90 प्रतिशत, चित्र निबंध 0.90 प्रतिशत।

निम्न पुस्तकों में चित्रों की अनेक विधाओं का उपयोग हुआ है। निष्कर्ष में निम्न बातें उभरकर सामने आई हैं —

1. फ़ोटोग्राफ़ चित्र प्रभावी ढंग से वास्तविक स्थिति को दर्शाते हैं, अतः उनका उपयोग अधिक-से-अधिक हो।
2. चित्रकथापट्ट व चित्र निबंध के बहुत सकारात्मक परिणाम आए हैं, विद्यार्थियों ने इन्हें पढ़ना रुचिकर बताया है।
3. हस्तनिर्मित चित्रों के स्थान पर फ़ोटोग्राफ़ अधिक प्रभावी हैं।
4. पोस्टर प्रभावशाली हैं तथा विद्यार्थियों में विचार शक्ति जगाने में उपयोगी हैं।
5. विद्यार्थियों को कॉर्टून चित्रों को देखना रुचिकर लगता है, अतः उनका अधिक प्रयोग हो।
6. कोलॉज देखना विद्यार्थियों को रुचिकर व ज्ञानवर्धक लगता है।

6. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों में उपस्थित लैंगिक बोध का अध्ययन

(i) *कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों का लैंगिक बोध* — कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित 80 चित्रों में से केवल 68 चित्र ही लैंगिक बोध से संबंधित थे और सभी 68 चित्रों से लैंगिक पृष्ठभूमि का बोध हो रहा है, अतः सभी 100 प्रतिशत चित्रों से लैंगिक बोध स्पष्ट है।

(ii) *कक्षा 7 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों का लैंगिक बोध* — कक्षा 7 की पुस्तक सामाजिक व राजनीतिक जीवन में कुल 114 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से 104 चित्र ही लैंगिक बोध से संबंधित थे, जिनमें से 103 चित्रों द्वारा लैंगिक बोध हो रहा है तथा 1 चित्र द्वारा लैंगिक बोध नहीं हो रहा है, अतः कक्षा 7 की पुस्तक के कुल 99 प्रतिशत चित्रों से लैंगिक बोध हो रहा है।

(iii) *कक्षा 8 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों का लैंगिक बोध* — कक्षा 8 की पुस्तक सामाजिक व राजनीतिक जीवन

भाग में 3 में कुल 112 चित्र अंकित हैं, जिनमें से केवल 95 चित्रों का ही लैंगिक बोध से संबंध है और इन 95 चित्रों में से 93 चित्रों से लैंगिक बोध स्पष्ट रूप से हो रहा है। अतः कक्षा 8 की पुस्तक के 98 प्रतिशत चित्रों द्वारा लैंगिक बोध स्पष्ट है, जबकि 2 प्रतिशत चित्रों द्वारा लैंगिक बोध स्पष्ट रूप से नहीं हो रहा है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि निम्न पुस्तकों के ज़्यादातर चित्रों द्वारा लैंगिक बोध हो रहा है, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है कि निम्न पुस्तकों में दोनों लिंगों के चित्रों का उचित प्रतिनिधित्व दर्शाया गया है।

7. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों के द्वारा सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक पृष्ठभूमि के बोध का अध्ययन

(i) *कक्षा 6 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि बोध* — कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित 80 चित्रों में से केवल 71 चित्र ही पृष्ठभूमि के बोध से संबंधित थे और इनमें से 70 चित्रों से पृष्ठभूमि का बोध हो रहा है, जबकि 1 चित्र से पृष्ठभूमि का बोध नहीं हो रहा है। अतः 99 प्रतिशत चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि का बोध हो रहा है व 1 प्रतिशत चित्रों से पृष्ठभूमि का बोध नहीं हो पा रहा है।

(ii) *कक्षा 7 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि बोध*— कक्षा 7 की पुस्तक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में कुल 114 चित्र प्रदर्शित हैं, जिनमें से केवल 104 चित्र ही पृष्ठभूमि बोध से संबंधित थे और इनमें से 100 चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि का बोध हो रहा है और 4 चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि का बोध नहीं हो रहा है। अतः 96.16 प्रतिशत चित्रों से पृष्ठभूमि का बोध हो रहा है तथा 3.84 प्रतिशत चित्रों से पृष्ठभूमि का बोध नहीं हो रहा है।

(iii) *कक्षा 8 के नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि बोध* — कक्षा 8 की पुस्तक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन भाग 3 में कुल 112 चित्र अंकित हैं, जिनमें से केवल 95 चित्रों का ही संबंध पृष्ठभूमि बोध से है और इन 95 चित्रों में से 93 चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि बोध हो रहा है तथा 2 चित्रों द्वारा पृष्ठभूमि बोध नहीं हो रहा है। अतः कक्षा 8 की पुस्तक के 97.89 प्रतिशत चित्रों से पृष्ठभूमि बोध हो रहा है तथा 2.11 प्रतिशत चित्रों से पृष्ठभूमि बोध नहीं हो रहा है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि निम्न पुस्तकों के ज़्यादातर चित्रों द्वारा विद्यार्थी चित्रित व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक व भौगोलिक पृष्ठभूमि का बोध कर पा रहे हैं।

8. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में मुखपृष्ठ पर बने चित्रों का विषय से संबंध का अध्ययन

(i) *कक्षा 6 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ का विषय से संबंध* — कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ पर बने चित्र का नागरिक शास्त्र विषय से संबंध में कमी है।

पुस्तक का नाम सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन है। 65 प्रतिशत शिक्षकों तथा 77 प्रतिशत विद्यार्थियों ने भी इस मुखपृष्ठ पर अंकित चित्र (चित्र 5) का संबंध विषय से नहीं माना, जबकि 35 प्रतिशत शिक्षकों तथा 23 प्रतिशत विद्यार्थियों ने मुखपृष्ठ पर अंकित चित्र को विषय से संबंधित माना।

कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ पर अंकित चित्र का संबंध विषय से नहीं है, अतः मैं निर्माताओं से उसमें बदलाव करने की अनुशंसा करती हूँ।

(ii) *कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ का विषय से संबंध* — कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक का मुखपृष्ठ विषय से संबंधित है। मुखपृष्ठ पर प्रस्तुत चित्र स्पष्ट व प्रभावशाली है। 75 प्रतिशत शिक्षकों ने इसे प्रभावी माना है तथा 90 प्रतिशत विद्यार्थियों ने भी पुस्तक के मुखपृष्ठ को विषय से संबंधित माना है, जबकि 25 शिक्षक व 10 विद्यार्थी मुखपृष्ठ को विषय से संबंधित नहीं मानते हैं। मुखपृष्ठ 3 पर भारत का मानचित्र अंकित है, 88 प्रतिशत शिक्षकों ने इसमें तेलगांना राज्य प्रदर्शित नहीं होने की बात कही है। 66 प्रतिशत विद्यार्थियों ने भी इसमें तेलगांना राज्य के प्रदर्शित नहीं होने की बात कही।

(iii) *कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ का विषय से संबंध* — कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक जो कि सामाजिक विज्ञान का भाग है इसका नाम सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन भाग 3 है, का मुखपृष्ठ विषय से संबंधित है, मुखपृष्ठ पर प्रस्तुत चित्र

चित्र 5

स्पष्ट, सार्थक और प्रभावशाली है तथा 80 प्रतिशत शिक्षकों व 85 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इस मुखपृष्ठ पर प्रदर्शित चित्र को विषय से संबंधित माना, जबकि 20 प्रतिशत शिक्षकों तथा 15 प्रतिशत विद्यार्थियों ने मुखपृष्ठ पर अंकित चित्र को विषय से संबंधित नहीं माना है। मुखपृष्ठ 3 पर अन्य पाठ्यपुस्तकों के चित्र प्रदर्शित हैं जो कि विषय से संबंधित नहीं हैं। 60 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि मुखपृष्ठ 3 पर इन पुस्तकों के चित्रों के स्थान पर भारत का मानचित्र प्रदर्शित होना चाहिए था।

(iv) *मुखपृष्ठ* — कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ पर अंकित चित्र का संबंध विषय से नहीं है, अतः मैं निर्माताओं से उसमें बदलाव करने की अनुशंसा करती हूँ।

9. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों के प्रति अध्यापकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोणों का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों

का विषय-वस्तु विश्लेषण हेतु साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण कर शिक्षकों के प्रत्येक चित्र के विषय में विचार जानने का प्रयास किया गया और संपूर्ण पुस्तक में अंकित चित्रों के विषय में विचार जाने गए तथा पुस्तकों में प्रकाशित चित्रों को बेहतर बनाने हेतु शिक्षकों के सुझाव माँगे गए, जो विचार सामने आए वे निम्न हैं — चित्र स्पष्ट हों, रंगीन हों, विषय-वस्तु से संबंधित हों, पूर्ण हों, चित्र के नीचे चित्र से संबंधित पंक्ति अंकित हो, चित्रकथाओं का प्रयोग अधिक हो, कॉर्टून चित्र विद्यार्थियों में उत्सुकता तथा रचनात्मकता बढ़ाते हैं, अतः उनका प्रयोग अधिक किया जाए।

10. उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त चित्रों के प्रति विद्यार्थियों के व्यक्तिगत दृष्टिकोणों का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया गया और प्रत्येक चित्र पर विद्यार्थियों के विचार जाने गए, तथा अंत में पूर्ण पुस्तक में प्रकाशित चित्रों के विषय में विचार जानने का प्रयास किया गया और जाना गया कि क्या वे प्रदर्शित चित्रों से संतुष्ट हैं? क्या शिक्षक पढ़ाते समय चित्रों का प्रयोग करते हैं? आदि। उत्तर में विद्यार्थियों ने बताया कि वे पाठ्यपुस्तक में प्रदर्शित ज़्यादातर चित्रों से संतुष्ट हैं, लेकिन शिक्षक पढ़ाते समय उनका बहुत अधिक उपयोग नहीं करते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ — प्रस्तुत शोध उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण की अनेक शैक्षिक उपयोगिताएँ हैं।

अध्यापकों के लिए — उच्च प्राथमिक स्तर की विषय-वस्तु विश्लेषण की अध्यापकों के लिए विशेष उपयोगिता है, क्योंकि पाठ्यपुस्तकों में अंकित चित्र अध्यापकों के लिए विषय-वस्तु के स्पष्टीकरण हेतु उपकरण हैं। यदि पाठ्यपुस्तकों में प्रकाशित चित्र स्पष्ट विषय-वस्तु से संबंधित, सार्थक व प्रभावशाली होंगे तो अध्यापकों के लिए विषय-वस्तु को समझाना सरल हो जाएगा।

विद्यार्थियों के लिए — उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण विद्यार्थियों के लिए भी विशेष उपयोगी है, क्योंकि यदि पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्र स्पष्ट, विषय-वस्तु से संबंधित, सार्थक व प्रभावशाली होंगे, तो विद्यार्थियों की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों तथा विषय के प्रति रुचि जाग्रत हो सकेगी। पाठ्यपुस्तकों का निर्माण विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए किया जाता है। यदि नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तकों में अंकित चित्र उपयुक्त होंगे तो विद्यार्थियों को इसका सीधा लाभ प्राप्त होगा।

शिक्षा विभाग के लिए — प्रस्तुत शोध शिक्षा विभाग के लिए अत्यंत उपयोगी है। उपयुक्त शोध उच्च प्राथमिक स्तर की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों का विषय-वस्तु विश्लेषण द्वारा पुस्तक के चित्रों का विश्लेषण किया गया तथा चित्रों के विषय में विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के विचारों को जाना गया। इससे शिक्षा विभाग को उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में मदद मिल सकती है। पाठ्यपुस्तकें भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला हैं और पाठ्यपुस्तक में अंकित

चित्र भी विषय-वस्तु के समान ही महत्वपूर्ण हैं। यदि पाठ्यपुस्तकों में अंकित चित्र उपयुक्त होंगे तो पाठ्यपुस्तकों का महत्व बढ़ जाएगा तथा वे शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए और उपयोगी हो जाएँगी। पाठ्यपुस्तकों में समावेशित चित्र अधिगम को प्रभावित करते हैं, यदि चित्र स्पष्ट विषय-वस्तु से संबंधित, सार्थक व प्रभावशाली होंगे तो अधिगम अच्छा, शीघ्र व स्थायी होगा।

भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रस्तुत शोध को गुणात्मक के स्थान पर परिमाणात्मक रूप भी दिया जा सकता है जिसमें कक्षाध्यापकों द्वारा चित्रों के प्रयोग का संख्यात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध प्रयोगात्मक रूप में भी किया जा सकता है, जिसमें विषय-वस्तु की समझ पर पाठ्यपुस्तक में समावेशित चित्रों के प्रयोग के प्रभाव की जाँच की जा सकती है।
- प्रस्तुत शोध को एन.सी.ई.आर.टी. की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक तथा आर.एस.सी.ई.आर.टी. की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक से तुलनात्मक रूप में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अन्य विषयों की पाठ्यपुस्तकों पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005*. नयी दिल्ली.

गारबिच, सी. 2007. *क्वालिटेटिव डेटा एनालेसिस एन इन्ट्रोडक्शन*. सेज पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.

चन्द्रा, सोती एस. और के. आर. शर्मा. 1997. *रिसर्च इन एजुकेशन*. अटलांटिक पब्लिशर्स. दिल्ली.

पेटन, एम.क्यू. 1982. *क्वालिटेटिव इवेल्यूएशन मेथड*. सेज पब्लिकेशन इंक, लंदन.

बेबी, ई. 2008. *द बेसिक ऑफ़ सोशल रिसर्च*. थॉमसन वूड्सवर्थ, न्यूयॉर्क.

मंगलेशवरन, आर. 2011. *पेराडाइम इन सोशल सांइस रिसर्च*. न्यू होरिज़न, नयी दिल्ली.

हीटर, डी.बी. 1969. *द टीचिंग ऑफ़ पोलिटिक्स*. मेथवन एजुकेशनल लिमिटेड, लंदन.

स्टीनबेरी, एस. 1967. *हेंड बुक फ़ॉर सोशल स्टडी टीचिंग*. रिनहॉर्ट एंड विन्सटन इंक, न्यूयार्क.